साहित्योत्सव 2016
festival of letters
15-20 February 2016

दैनिक समाचार बुलेटिन

रविवार, 21 फ़रवरी 2016

संगोष्ठी : अनुवाद चेतना और भारत में भारतीय साहित्यिक परंपराएँ

साहित्य अकादेमी द्वारा साहित्योत्सव के अंतिम दिन 'अनुवाद चेतना और भारत में भारतीय साहित्यिक परंपराएँ' विषय पर संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संगोष्ठी के विशिष्ट अतिथि प्रख्यात विद्वान इंद्रनाथ चौधुरी ने कहा कि अनुवाद के लिए अंग्रेज़ों का नज़रिया औपनिवेशिक था। उन्होंने उन्हीं कृतियों को अनुवाद के लिए चुना, जिनसे भारत के प्रति उनके नज़रिए की पुष्टि होती थी। उन्होंने भारतीय साहित्य परंपराओं की लंबी कड़ी का हवाला देते हुए कहा कि संस्कृत भाषा के एकाधिकार होने के कारण या सत्ता से उसकी नज़दीकियों के चलते उस समय की अन्य भाषाओं की गहरी उपेक्षा की गई।

संगोष्ठी का बीज वक्तव्य अवधेश कुमार सिंह ने दिया। उन्होंने अनुवाद की भारतीय साहित्यिक परंपरा को चार भागों में बाँटकर अपनी बात को स्पष्ट किया। ये काल थे -- शास्त्रीय काल (100-1000), भक्ति काल (1000-1750), औपनिवेशिक काल (1757-1947) एवं वर्तमान काल। उन्होंने कहा कि कोई भी संप्रेषण अनुवाद तथा अनुवादकीय चेतना के बिना संभव नहीं है।

अपने अध्यक्षीय भाषण में साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने कहा कि अनुवाद की राष्ट्रीय संगोष्ठी में सबसे पहले मैं अनुवाद के पूर्वजों को स्मरण करना ज़रूरी समझता हूँ। उन्होंने कहा कि आज जब संचार और मीडिया के उत्कृष्ट साधन हमारे सामने मौजूद हैं, ऐसे में ये कल्पना करना भी मुश्किल है कि आज से दो-ढाई हज़ार साल पहले से लोग देशों की सीमाएँ पार कर केवल अनुवाद के लिए इस धरती से उस धरती पर आते-जाते रहे हैं। ये शताब्दी अनुवाद की शताब्दी है। अनुवाद के द्वारा ही आज हम अपने संसार को 'ग्लोबल विलेज' कह पा रहे हैं।

समाहार वक्तव्य प्रस्तुत करते हुए साहित्य अकादेमी के उपाध्यक्ष चंद्रशेखर कंबार ने कहा कि अनुवाद केवल भाषा का ही अनुवाद नहीं बल्कि एक संस्कृति से दूसरी संस्कृति तक पहुँचना भी है। अतः अनुवाद के चयन में हमें एक विशेष सजगता की ज़रूरत है। भूमंडलीकरण के इस समय में हमें अनुवाद को राजनीतिक एजेंडे से दूर करना होगा, तभी बड़ी-बड़ी भाषाओं के बीच में छोटी भाषाएँ आगे बढ़ पाएँगी।

कार्यक्रम के आरंभ में अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने सभी प्रतिभागियों का स्वागत करते हुए अनुवाद के क्षेत्र में अकादेमी की विभिन्न योजनाओं के बारे में बताते हुए कहा कि साहित्य अकादेमी देश की एकमात्र ऐसी संस्था है, जो 24 से ज़्यादा भाषाओं में अनुवाद का कार्य कर रही है। इस संगोष्ठी में हुए विचार मंथन से साहित्य अकादेमी एक नए तरीक़े से अपने अनुवाद कार्यक्रमों को संचालित करेगी। इसके बाद आयोजित तीन सत्र, जो 'भक्ति आंदोलन में अनुवादकीय आदान-प्रदान', 'औपनिवेशिक भारत में अनुवादकीय उद्यम' तथा 'समकालीन अनुवादकीय पहल और प्रभाव' पर केंद्रित थे, में निर्मल कांति भट्टाचार्जी, आलोक भल्ला और नमिता गोखले की अध्यक्षता में टी. एस. सत्यनाथ, प्रकाश भातंब्रेकर, राजेंद्र प्रसाद मिश्र, मोनालिसा जेना, कल्याण रमण, नीता गुप्ता और हरीश नारंग द्वारा आलेख प्रस्तुत किए गए। कार्यक्रम का संचालन अकादेमी की उपसचिव रेणु मोहन भान ने किया।

आओ कहानी बुनें : बाल गतिविधियाँ

साहित्योत्सव के अंतर्गत अंतिम दिन 'आओ कहानी बुनें : बाल गतिबिधियाँ' का उद्घाटन हिंदी के प्रख्यात बाल-साहित्यकार प्रयाग शुक्ल ने किया। इस अवसर पर उन्होंने अकादेमी द्वारा बच्चों तथा बाल-साहित्य के क्षेत्र में संपादित की जानेवाली गतिविधियों के लिए अकादेमी को बधाई दी। उन्होंने बताया कि बच्चों को कम उम्र से ही समुचित दिशा-निर्देश दिया जाना ज़रूरी है। उन्होंने बच्चों को अपनी कविताएँ भी सुनाई। आरंभ में अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने औपचारिक स्वागत करते हुए बाल-साहित्य के क्षेत्र में अकादेमी की गतिविधियों पर संक्षेप में प्रकाश डाला तथा कहा कि बच्चों में साहित्य पठन के प्रति अभिरुचि जगाना हमारा दायित्व होना चाहिए। इस अवसर पर अकादेमी द्वारा हिंदी में प्रकाशित आलोचना कृति *भारतीय बाल साहित्य* (सं. हरिकृष्ण देवसरे) एवं *पापू बापू बने महात्मा* (ले. मुहम्मद कुन्ही) तथा चीनी बाल-साहित्य कृतियों के अंग्रेज़ी अनुवाद *सेलेक्टेड स्टोरीज़ ऑफ लिआयो ज़ाई ज़ी यी* और *स्टोरीज़ ऑफ हुएनांजी* का लोकार्पण प्रयाग शुक्ल द्वारा किया गया। कार्यक्रमों का संयोजन-संचालन अकादेमी की उपसचिव गीतांजलि चटर्जी द्वारा किया गया।

बाल गतिविधियों के अंतर्गत 22 स्कूलों के 160 बच्चों ने अपनी हिस्सेदारी की। दो आयुवर्गों में कविता लेखन प्रतियोगिता (निर्णायक : दिविक रमेश एवं अनूपा लाल), सृजनात्मक लेखन कार्यशाला (राहुल सैनी द्वारा संचालित), पेंटिंग कार्यशाला (एम. वी. रामाराव द्वारा संचालित) तथा कार्टून कार्यशाला (सुधीर नाथ द्वारा संचालित) का आयोजन इस समारोह के विशेष आकर्षण थे। अनूपा लाल और वैलेंटिना त्रिवेदी ने क्रमशः अंग्रेज़ी और हिंदी में बच्चों को कहानियाँ सुनाईं। कविता लेखन प्रतियोगिता के विषय थे – 'स्वच्छ भारत' और 'बढ़ता प्रदूषण'। कनिष्ठ आयु वर्ग (7-12 वर्ष) के विजयी प्रतिभागी हैं – अरुणिमा त्रिपाठी (प्रथम), ए. एम. एन. माधुरी (द्वितीय), खुशी भट्ट (तृतीय) तथा डी. एम. रमिता एवं करन राज (प्रोत्साहन)। वरिष्ठ आयु वर्ग (13-17 वर्ष) के विजयी प्रतिभागी हैं – खुशबू जालु थरिया (प्रथम), गौरी लक्ष्मी एम. (द्वितीय) अफ़साना (तृतीय) तथा आमिर हुसैन एवं रुचि सिंह (प्रोत्साहन)। विजयी प्रतिभागियों को अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव द्वारा पुरस्कार प्रदान किए गए। इस दौरान बच्चों के लिए दो विशेष सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए गए – पं दीन दयाल उपाध्याय विकलांग जन संस्थान, दिल्ली के बच्चों द्वारा नृत्य-संगीत की अनेक प्रस्तुतियाँ तथा यंग मिजोरम एसोसिएशन, चिंगावेज शाखा, मिजोरम द्वारा चेराव (बाँस-नृत्य) की प्रस्तुति।

राष्ट्रीय संगोष्ठी
तीसरा दिन

गाँधी, अम्बेडकर, नेहरू : निरंतरता और अलगाव

'गाँधी, अम्बेडकर, नेहरू : निरंतरता और अलगाव' विषयक राष्ट्रीय संगोष्ठी के अंतिम दिन तीन सत्रों में विद्वानों द्वारा 'अल्पसंख्यक और बहुसंख्यक', 'संस्कृति और शिक्षा' तथा 'धर्म और लोकतंत्र' मुद्दे पर केंद्रित विचार-विमर्श किया।

'अल्पसंख्यक और बहुसंख्यक' सत्र की अध्यक्षता नंदकिशोर आचार्य ने की। इस सत्र में राणा नायर और प्रवीण पंड्या ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। राणा नायर ने अपने वक्तव्य में डॉ. अम्बेडकर द्वारा शिक्षा और समानता के अधिकारों के संघर्ष और कार्यों को रेखांकित किया। उन्होंने वर्तमान समय में हुई कई घटनाओं का उदाहरण देते हुए अत्याचार और शोषण का मुद्दा उठाया। प्रवीण पंड्या ने कहा कि गाँधी ने मुख्य रूप से तीन प्रकार के अल्पसंख्यकों का उल्लेख किया है। एक धार्मिक, दूसरे सामाजिक और तीसरे राजनीतिक। प्रवीण पंड्या ने कई साहित्यिक रचनाओं के हवाले से कहा कि इरावती कर्वे के 'युगांत' में मयसभा निबंध में खांडव वन दहन का प्रसंग है। हम दरअसल 'खांडव वन सिंड्रोम' से ग्रस्त हैं। उन्होंने आगे कहा कि गाँधी, अम्बेडकर, नेहरू ने बड़ी जद्दोजहद के साथ आधा पुल तो बनाकर दिया ही है। अब आधा हमें बनाना है। अध्यक्षीय वक्तव्य में नंदकिशोर आचार्य ने कहा कि जो संख्या में कम हैं लेकिन शक्ति संपन्न हैं उन्हें अल्पसंख्यक नहीं माना जा सकता। आर्थिक दृष्टि से अल्पसंख्यक और बहुसंख्यक कौन है, इस पर विचार किया जाना चाहिए।

'संस्कृति और शिक्षा' विषयक सत्र की अध्यक्षता एच. एस. शिवप्रकाश ने की। इस सत्र में अपना आलेख प्रस्तुत करते हुए नीलांजना देव ने कहा कि गाँधी, अम्बेडकर, नेहरू और राधाकृष्णन जैसे चिंतकों की सोच प्राचीन भारतीय संस्कृति और दर्शन पर आधारित रही है। नीलांजना देव ने भारतीय दर्शन और प्राच्य दर्शन के हवाले से तीनों की भूमिका और कार्यों की विवेचनात्मक रूपरेखा प्रस्तुत की।

सत्यनारायण साहू ने डॉ. अम्बेडकर की संस्कृति के संबंध में कही बातों को अपने वक्तव्य में रेखांकित करते हुए कहा कि तीनों ही विभूतियों का कृतित्व सहमति-असहमति के बावजूद भारतीय समाज में निर्णायक परिवर्तन करने में काफी हद तक सफल रहा है लेकिन अभी भी बहुत सी बुरी परिस्थितियाँ बदली जानी हैं, जिसके लिए हमें इन तीनों ही चिंतकों के दृष्टिकोण को पुनः समझना बहुत ज़रूरी है। एच. एस. शिवप्रकाश ने अध्यक्षीय वक्तव्य में कहा कि हम इन चिंताजनक प्रश्नों को हल नहीं कर सके हैं।

'धर्म और लोकतंत्र' विषयक सत्र की अध्यक्षता पुरुषोत्तम अग्रवाल ने की। सत्यकाम बरठाकुर ने गाँधी, अम्बेडकर और नेहरू के लोकतंत्र संबंधी विचारों को उद्धृत करते हुए कहा कि तीनों इसके लिए मतैक्य थे कि देश की लोकतांत्रिक स्वर को बनाए रखने कि लिए धर्म को अवरोधक नहीं बनने देना चाहिए। श्रीभगवान सिंह ने 'धर्म के सदर्भ में गाँधी-विचार' शीर्षक आलेख प्रस्तुत किया और कहा कि यह ध्रुव सत्य है कि गाँधी जी के चिंतन एवं कर्म में धर्म सर्वोपरि था। इस सत्र में शाहबाज़ हक़बरी ने भी अपने विचार प्रस्तुत किए। आज के सत्रों का संचालन अकादेमी के संपादक (हिंदी) कुमार अनुपम ने किया।

साहित्य अकादेमी
रवींद्र भवन, 35, फ़ीरोज़शाह मार्ग (मंडी हाउस मेट्रो स्टेशन के पास), नई दिल्ली-110 001
फोन : +91-011-23386626 / 27 / 28
ई-मेल : secretary@sahitya-akademi.gov.in
वेब-साइट : www.sahitya-akademi.gov.in